एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 01, अंक: 04 (सितम्बर-अक्टूबर, 2021)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

दैनिक जीवन में कृषि का महत्व

(*मुकेश जाखड़[1], शिशपाल कांटवा[2] एवं नरेंद्र पादरा[3])
[1]शोधार्थी, कीट विज्ञान विभाग, राजा बलवंत सिंह कृषि महाविद्यालय बिचपुरी, आगरा, उ.प्र.
[2]शोधार्थी, सैम हिग्गिनबोतोम कृषि प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ.प्र.
* jakharmukesh689@gmail.com

कृषि भारत देश की आर्थिक व्यवस्था की रीढ़ है। कृषि भोजन और कच्चा माल उपलब्ध कराने के अतिरिक्त जनसंख्या के एक बहुत बड़े प्रतिशत को रोजगार के अवसर भी प्रदान करती है। कृषि को आवश्यक खाद्य फसलों के उत्पादन से जोड़ा गया है। वर्तमान में खेती से ऊपर और बाहर की कृषि में वानिकी, डेयरी, फलों की खेती, मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन, मशरूम, मनमानी आदि शामिल हैं। आज प्रसंस्करण, विपणन और फसलों और पशुधन उत्पादों का वितरण आदि सभी को वर्तमान कृषि के हिस्से के रूप में स्वीकार किया जाता है। कृषि को कृषि उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण, संवर्धन और वितरण के रूप में संदर्भित किया जा सकता है। किसी अर्थव्यवस्था के संपूर्ण जीवन में कृषि एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

कृषि का महत्व

- आजीविका का स्रोत:- अधिकांश लोगों की आजीविका का मुख्य स्रोत खेती है। लगभग 70% लोग आजीविका के रूप में सीधे कृषि पर निर्भर हैं। तेजी से बढ़ती जनसंख्या को अवशोषित करने के लिए गैर-कृषि गतिविधियों के गैर-विकास का परिणाम कृषि में यह उच्च प्रतिशत है।
- राष्ट्रीय राजस्व में योगदान:- अधिकांश विकासशील देशों के लिए कृषि राष्ट्रीय आय का मुख्य स्रोत है। हालांकि, विकसित देशों के लिए, कृषि उनकी राष्ट्रीय आय में एक छोटे प्रतिशत का योगदान करती है।
- भोजन के साथ-साथ चारे की आपूर्ति:- कृषि क्षेत्र घरेलू पशुओं के लिए चारा उपलब्ध कराता है। गाय लोगों को दूध प्रदान करती है जो सुरक्षात्मक भोजन का एक रूप है। इसके अलावा, पशुधन लोगों की खाद्य आवश्यकताओं को भी पूरा करता है।
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए महत्व:- कृषि उत्पाद जैसे चीनी, चाय, चावल, मसाले, तंबाकू, कॉफी आदि कृषि पर निर्भर देशों के निर्यात की प्रमुख वस्तुएं हैं। यदि कृषि का विकास सुचारू रूप से चलता है, तो आयात कम हो जाता है जबकि निर्यात काफी बढ़ जाता है।
- विपणन योग्य अधिशेष:- कृषि क्षेत्र की वृद्धि एक विपणन योग्य अधिशेष में योगदान करती है। जैसे-जैसे राष्ट्र विकसित होता है, बहुत से लोग विनिर्माण, खनन, साथ ही एक अन्य गैर-कृषि क्षेत्र में संलग्न होते हैं।
- कच्चे माल का स्रोत:- कपास और जूट के कपड़े, चीनी, तंबाकू, खाद्य के साथ-साथ अखाद्य तेलों जैसे प्रमुख उद्योगों के लिए कच्चे माल का मुख्य स्रोत कृषि है। इसके अलावा, कई अन्य उद्योग जैसे फलों के

साथ-साथ सब्जियों और चावल की भूसी का प्रसंस्करण मुख्य रूप से कृषि से अपना कच्चा माल प्राप्त करते हैं।

- परिवहन में महत्व:- कृषि उत्पादों का बड़ा हिस्सा रेलवे और रोडवेज द्वारा खेतों से कारखानों तक पहुँचाया जाता है। अधिकतर, आंतरिक व्यापार कृषि उत्पादों में होता है। इसके अलावा, सरकार का राजस्व काफी हद तक कृषि क्षेत्र की सफलता पर निर्भर करता है।
- रोजगार के अवसर:- कृषि क्षेत्र में सिंचाई योजनाओं, जल निकासी व्यवस्था के साथ-साथ ऐसी अन्य गतिविधियों का निर्माण महत्वपूर्ण है क्योंकि यह रोजगार के बड़े अवसर प्रदान करता है।
- आर्थिक विकास:- राष्ट्रीय आय स्तर, साथ ही लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है। कृषि क्षेत्र में विकास की तेज दर प्रगतिशील दृष्टिकोण के साथ-साथ विकास के लिए बढ़ी हुई प्रेरणा प्रदान करती है।
- खाद्य सुरक्षा:- एक स्थिर कृषि क्षेत्र एक राष्ट्र को खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करता है। किसी भी देश की मुख्य आवश्यकता खाद्य सुरक्षा होती है। खाद्य सुरक्षा कुपोषण को रोकती है जिसे परंपरागत रूप से विकासशील देशों द्वारा सामना की जाने वाली प्रमुख समस्याओं में से एक माना जाता है।

कृषि महत्वपूर्ण और दैनिक जीवन में इसकी भूमिका

- विश्व के अधिकांश भागों में कृषि आजीविका का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।
- इसके लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है, लेकिन यह देश की खाद्य सुरक्षा और स्वास्थ्य में योगदान देता है।
- औद्योगिक क्रांति से पहले कृषि अर्थव्यवस्था का प्राथमिक स्रोत था।
- कई व्यापार विकल्प सामने आने के साथ, कई कृषि पर अपनी आय पर निर्भर हैं।
- कृषि सबसे शांतिपूर्ण और पर्यावरण के अनुकूल तरीका है।
- यह मानवता के लिए जीवन का एक बहुत ही विश्वसनीय स्रोत है, साथ ही आय के ईमानदार स्रोतों में से एक है। विकासशील देशों के बहुत से लोग कृषि पर अपनी आजीविका के लिए निर्भर हैं।
- कुछ लोगों के पास अभी भी अन्य व्यवसायों या नौकरियों में एक साइड बिजनेस के रूप में कृषि है।
- कृषि केवल खेती और खेती तक ही सीमित नहीं है। इसमें डेयरी, मुर्गी पालन, वानिकी, मधुमक्खी पालन और रेशम उत्पादन भी शामिल है।